पियाजे का सिद्धांत क्रांतिकारी था, लेकिन समय के साथ कई मनोवैज्ञानिकों ने इसके कुछ पहलुओं को चुनौती दी। साथ ही, शिक्षकों ने इस सिद्धांत का उपयोग करके कक्षा में पढ़ाने के तरीकों में बड़े बदलाव किए।

आइए इन दोनों पक्षों को विस्तार से समझते हैं:

---

1. पियाजे के सिद्धांत की आलोचना (Criticisms)

यद्यपि पियाजे का काम बहुत महत्वपूर्ण था, लेकिन आधुनिक शोधकर्ताओं ने इसमें निम्नलिखित कमियाँ पाईं:

- **उम्र और क्षमता का कम आकलन:** कई शोध बताते हैं कि बच्चे पियाजे द्वारा बताई गई उम्र से **पहले** ही कई जटिल कार्य कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि प्रयोग को सरल बनाया जाए, तो बहुत छोटे बच्चों में भी 'वस्तु स्थायित्व' (Object Permanence) के संकेत मिलते हैं।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव की अनदेखी:** पियाजे ने जैविक परिपक्वता (Biology) पर अधिक जोर दिया, लेकिन उन्होंने इस बात को नजरअंदाज कर दिया कि बच्चा जिस संस्कृति या समाज में रहता है, वह भी उसके सोचने के तरीके को तेजी से बदल सकता है (जैसा कि वायगोत्स्की ने बताया)।
- **विकास के चरणों की कठोरता:** पियाजे का मानना था कि विकास स्पष्ट चरणों (Stages) में होता है। लेकिन वास्तव में, विकास अक्सर एक **निरंतर प्रक्रिया (Continuous process)** होती है। बच्चा एक ही समय में एक कार्य में 'मूर्त संक्रियात्मक' और दूसरे में 'पूर्व-संक्रियात्मक' हो सकता है।
- **औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था:** शोध बताते हैं कि सभी वयस्क कभी भी 'औपचारिक संक्रियात्मक' (अमूर्त चिंतन) के स्तर तक नहीं पहुँच पाते, या वे इसका उपयोग केवल अपने रुचि के क्षेत्रों में ही करते हैं।

---

2. शिक्षा में पियाजे के सिद्धांत का उपयोग (Educational Applications)

पियाजे के सिद्धांत ने आधुनिक शिक्षण पद्धतियों (Teaching Methods) को पूरी तरह बदल दिया:

- **खोजपूर्ण अधिगम (Discovery Learning):** शिक्षकों ने बच्चों को रटाने के बजाय उन्हें **सक्रिय अन्वेषण** के लिए प्रेरित किया। कक्षा में ऐसी सामग्री रखी जाती है जिसे बच्चा खुद छू सके, प्रयोग कर सके और सीख सके।
- **छात्रों की तत्परता (Readiness to Learn):** पियाजे के अनुसार, जब तक बच्चा किसी चरण के लिए जैविक रूप से तैयार न हो, उसे वह चीज नहीं सिखाई जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, 5 साल के बच्चे को जटिल बीजगणित (Algebra) सिखाना व्यर्थ है क्योंकि उसका मस्तिष्क अभी 'अमूर्त चिंतन' के लिए तैयार नहीं है।
- **व्यक्तिगत मतभेदों को स्वीकार करना:** चूंकि सभी बच्चे एक ही गति से चरणों को पार नहीं करते, इसलिए शिक्षक पूरी कक्षा को एक ही तरीके से पढ़ाने के बजाय छोटे समूहों या व्यक्तिगत गतिविधियों पर ध्यान देते हैं।
- **सक्रिय भागीदारी:** कक्षा में "करके सीखना" (Learning by doing) को महत्व दिया गया। खिलौने, ब्लॉक, विज्ञान के प्रयोग और पहेलियाँ संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देने के मुख्य साधन बने।

निष्कर्ष: पियाजे का योगदान

आलोचनाओं के बावजूद, पियाजे का सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उन्होंने दुनिया को यह बताया कि **"बच्चे वयस्कों के छोटे संस्करण नहीं हैं, बल्कि उनके सोचने का तरीका बिल्कुल अलग और अनोखा होता है।"**